हिन्दुस्तान
भरोसा नए हिन्दुस्तान का
सोमवार
27 अप्रैल 2026, बरेली

'पौलस्त्य' में दिखा रावण के संगीत व धर्मशास्त्र का ज्ञान

नाटक मंचन

बरेली, वरिष्ठ संवाददाता।
एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को डॉ. प्रभाकर गुप्ता लिखित कहानी और पौलस्त्य का मंचन हुआ। इसका नाट्य रुपांतरण अश्वनी कुमार ने किया है। विनायक श्रीवास्तव निर्देशित इस नाटक में पौलस्त्य (रावण) के जीवन के अनदेखे आयामों को मंचित किया गया। इसमें रावण को शिवभक्त, विद्वान, राजनीतिज्ञ, संगीतज्ञ और धर्मशास्त्रों के ज्ञाता के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

नाटक का आरंभ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा अनरण्य और युवा रावण यानि दसग्रीव के द्वंद्व युद्ध से होता है। दसग्रीव अनरण्य को तो पराजित करता ही है साथ में उसके इक्ष्वाकु कुल का भी अपमान करता है। इससे नाराज अनरण्य दसग्रीव को शाप देता है कि हमारे इक्ष्वाकु कुल में पैदा वीर ही तुम्हारा अंत करेगा। कुछ समय बीतने के बाद युवा दसग्रीव रावण के रूप आता है। रावण को अनरण्य द्वारा दिया गया शाप याद आता है कि कहीं राम उसी का हेतु बन कर तो नहीं आया है। इस नाटक का एक अत्यंत रोचक प्रसंग वह है, जब भगवान राम द्वारा स्थापित शिवलिंग की पूजा के लिए स्वयं रावण को पुरोहित के रूप में आमंत्रित किया जाता है, जहां वह शत्रुता से ऊपर उठकर अपने ब्राह्मण धर्म का निर्वहन करता है। रावण पुरोहित के रूप में राम को लंका विजय का भी आशीर्वाद देता है। उसकी मृत्यु से पूर्व राम लक्ष्मण को रावण से ज्ञान और उसकी राजनीतिक कुशलता की शिक्षा के लिए भेजते हैं। रावण कहता है कि शत्रु हमेशा मित्र से श्रेष्ठ होना चाहिए, क्योंकि संसार हम सब का मूल्यांकन मित्र से नहीं शत्रु की ऊंचाई से करता है। रावण लक्ष्मण को बोलता है कि अपने जीवन के रहस्यों को हमेशा गुप्त रखना क्योंकि उसके छोटे भाई विभीषण को उसकी मृत्यु का गूढ़ रहस्य मालूम था। इस अवसर पर

एसआरएमएस रिद्धिमा में नाटक पौलस्त्य का एक दृश्य।

एसआरएमएस ट्रस्ट के संस्थापक एवं चेयरमैन देव मूर्ति, आशा मूर्ति, आदित्य मूर्ति, ऋचा मूर्ति, वैविशा मूर्ति, उषा गुप्ता, डा. रजनी अग्रवाल, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. शैलेश सक्सेना आदि मौजूद रहे।